

आधुनिक भारतीयकरण के परिपेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार

डॉ. बृजेश कुमार

सहायक आचार्य

कौटिल्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कोटा

सारांश

स्वामी विवेकानन्द (1863-1902) भारतीय नवजागरण के प्रमुख चिंतक, संत और शिक्षाशास्त्री थे, जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना को पुनर्जनन प्रदान किया। उनके शैक्षिक विचार आधुनिक भारतीयकरण के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं। विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान या नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मा की पूर्णता की अभिव्यक्ति, चरित्र निर्माण, और मानवता की सेवा है। वे शिक्षा को मानव के समग्र विकास का साधन मानते थे, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति शामिल हो। विवेकानन्द ने नारी शिक्षा को समाज के उत्थान का आधार माना, यह कहते हुए कि बिना महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के समाज की प्रगति असंभव है। उन्होंने मातृभाषा में शिक्षा, व्यावहारिक और जीवनोपयोगी शिक्षा, तथा रटत विद्या के विरोध पर बल दिया। उनके विचारों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, नैतिकता, और सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने वाली शिक्षा की वकालत की गई। वे पश्चिमी विज्ञान और भारतीय आध्यात्म के संतुलन को भी महत्वपूर्ण मानते थे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में, जहां तकनीकी और रोजगार-उन्मुख शिक्षा पर जोर है, विवेकानन्द के विचार नैतिक मूल्यों, चरित्र निर्माण, और समाजसेवा को पुनर्जनन देने में सक्षम हैं। उनके दर्शन में शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्र निर्माण और मानवता की सेवा है। आज के तकनीकी और वैश्विक युग में उनके विचार युवाओं को आत्मबल, समावेशिता, और सामाजिक उत्तरदायित्व की प्रेरणा देते हैं। इस प्रकार, स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार आधुनिक भारत के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में प्रासंगिक बने हुए हैं।

प्रस्तावना:

“जब मैं अपने देश के प्राचीन इतिहास का सिंहावलोकन करता हूँ, तो सम्पूर्ण विश्व में मुझे ऐसा कोई देश नहीं दिखता जिसने मानवीय हृदय को उन्नत तथा सुस्कृत बनाने में भारत के समान चेष्टा की हो।”

-स्वामी विवेकानन्द

सर्व विदित है कि भारत का दर्शन व शिक्षा विश्व की प्राचीनतम दर्शन एवं शिक्षा है। दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में एक सिंधु घाटी सभ्यता का उदय इसी पवित्र भूमि पर हुआ था। जिसमें मातृशक्ति, शिव आदि के प्रतीक, धर्म से इस धरा के जुड़ाव की व्याख्या करते हैं। किन्तु कालान्तर में अफगानों, मुगलों व अंग्रेजी दासता के कारण हम अपनी महान सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, शिक्षा तथा महापुरुषों को हीन समझने लगे थे या विस्मृत कर चुके थे ऐसे में स्वामी विवेकानन्द का उदय हुआ पूर्व के इस महापुरुष के वर्तमान भारतीय दर्शन व शिक्षा में योगदान से पूर्व हमें इतिहास को दृष्टिगोचर करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

स्वामी विवेकानन्द भारतीय समाज के महान सुधारक, धार्मिक गुरु और शिक्षा के प्रेरणास्त्रोत थे। उनका दृष्टिकोण न केवल भारतीय समाज के सुधार की ओर था, बल्कि उन्होंने दुनिया भर में शिक्षा की शक्ति और आवश्यकता को रेखांकित किया। स्वामी विवेकानन्द के विचारों का गहरा प्रभाव आज भी हमारे समाज पर है। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में। उन्होंने शिक्षा को जीवन के उद्देश्य के रूप में देखा और इस पर जोर दिया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानवता

की सेवा करना और आत्मा की उन्नति करना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता को समझना, इस समय के शिक्षा के सुधार के लिए अत्यंत आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचार अत्यंत गहन, प्रेरणादायक और यथार्थपरक हैं। वे शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि उसका उद्देश्य मनुष्य के समग्र विकास को मानते थे। स्वामी विवेकानंद, भारतीय संस्कृति, शिक्षा और युवाओं के प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनके शिक्षा संबंधी विचार आज के आधुनिक युग में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहां केवल नौकरी प्राप्त करने पर जोर दिया जा रहा है, वहीं विवेकानंद का उद्देश्य था "मानव निर्माण", "चरित्र निर्माण" और "राष्ट्र निर्माण"।

स्वामी विवेकानंद शिक्षा शास्त्री के रूप में:

मनुष्य का अन्तिम लक्ष्य सुख नहीं वरन ज्ञान है। सुख और आनन्द विनाशशील है अतः सुख को चरम लक्ष्य मान लेना भूल है। संसार में सब दुखों का मूल यही है कि मनुष्य मुखतावश सुख को ही अपना समझ लेता है पर कुछ समय के बाद मनुष्य को यह बोध होता है कि जिसकी ओर वह जा रहा है, वह सुख नहीं वरन अज्ञान है, तथा जितनी शिक्षा उसे शुभ से मिलती है उतनी ही अशुभ से भी।

शिक्षा शास्त्री के रूप में स्वामी विवेकानंद की इस देश को देन महत्वपूर्ण है। स्वामी जी की शिक्षाएं प्रत्येक भारतीय के लिए जितनी तत्समय प्रासंगिक थी, उससे कहीं ज्यादा आज प्रासंगिक है। उनके द्वारा दिये गये व्याख्यानों से पता चलता है कि शिक्षा पर उनकी पकड़ जबरदस्त मजबूत थी। वे रटन्त विद्या के विरोधी थे तो ज्ञानोपार्जन के आकांक्षी थे। स्वामी जी शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व विकास के पक्षधर थे। उनके अनुसार "शिक्षा! शिक्षा! केवल शिक्षा! यूरोप के अनेक नगरों का भ्रमण करते हुए और वहां के गरीबों की भी सुख सुविधाओं तथा शिक्षा को देखकर मुझे अपने गरीब देशवासियों की याद आती थी और मैं आंसू बहाता था।

"अपने निम्न वर्ग के लोगों के प्रति हमारा एकमात्र कर्तव्य है उन्हें शिक्षा देना और उनके खोये हुए व्यक्तित्व का पुनः विकास करना।... उन्हें उत्तम विचार देने होंगे। उनके चारों ओर की दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में उनकी आखें खोल देनी होंगी। इसके बाद अपना उद्धार स्वयं करना होगा। उन्हें विचार दे दो-बस, एक इसी सहायता की उन्हें जरूरत है। इसके फलस्वरूप बाकी सब कुछ स्वयं ही हो जावेगा। हमें केवल स्वयं रसायनिक पदार्थों को एकत्र कर देना है, उन्हें बांधना तो प्राकृतिक नियमों से ही सम्पन्न होगा। उनके दिमाग में विचार भर देना ही हमारा कर्तव्य है, बाकी सब वे स्वयं कर लेंगे। भारत में बस यही करना है।"

स्वामी जी एक प्रबुद्ध शिक्षाशास्त्री थे। उन्होंने बताया कि किस प्रकार शिक्षा के माध्यम से भारत का उद्धार किया जा सकता है। दरिद्रों एवं श्रमिकों को यदि वे पढ़ने नहीं जा सकते तो उन्हें शिक्षा जहां वो काम कर रहे हैं वहीं प्रदान की जावे। स्वामी जी के शैक्षिक विचारों की विशेषता थी कि वो रूढ़िवादी, परम्परागत परिपाटियों जैसे रटन्त विद्या, शिक्षा चंद लोगों तक सीमित होना, के विरोधी थे। उनके शैक्षिक विचारों में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना तथा नारी शिक्षा पर जोर देना प्रमुख था।

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा संबंधी विचार:

स्वामी विवेकानंद का शिक्षा पर विचार एक बहुआयामी दृष्टिकोण से परिपूर्ण था। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का निर्माण करना था। उन्होंने कहा, "शिक्षा वह है जो मनुष्य के अंदर छिपी हुई महानता को जागृत करे।"

उनके अनुसार, शिक्षा को दो भागों में बांटा जा सकता है:

- **आंतरिक शिक्षा-** यह आत्मज्ञान और आत्मविकास से संबंधित है।
- **बाह्य शिक्षा-** यह ज्ञान और विज्ञान के अध्ययन से संबंधित है, जो समाज के विकास में योगदान करता है। स्वामी विवेकानंद ने यह भी कहा कि शिक्षा से केवल मनुष्य के शारीरिक और मानसिक विकास को ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा को भी प्रगति मिलनी चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि शिक्षा का उद्देश्य समाज को अच्छे नागरिक देना चाहिए, जो मानवता के मूल्यों को समझते हुए समाज के विकास में योगदान दें।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्वामी विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर आधारित है

शिक्षा का उद्देश्य:

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा वह है जो मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता को प्रकट करे।" उनके लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास करना था।

1. चरित्र निर्माण:

वे मानते थे कि चरित्रवान नागरिक ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की कमी देखी जा रही है, जिसे विवेकानंद के विचार संतुलित कर सकते हैं। विवेकानंद शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम मानते थे। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए:

- नैतिक मूल्यों का विकास,
- आत्मविश्वास का निर्माण,
- दृढ़ इच्छाशक्ति का पोषण।

उनकी प्रसिद्ध उक्ति है:

"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र बन सके, मानसिक बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सके।"

2. आत्मबल और आत्मविश्वास:

वे आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को शिक्षा का प्रमुख भाग मानते थे। आज के युवाओं में तनाव, असुरक्षा की भावना बढ़ रही है स्वामी विवेकानंद के अनुसार: विवेकानंद की शिक्षा आत्मबल प्रदान करती है। "शिक्षा वह है जिससे व्यक्ति अपने भीतर निहित पूर्णता को प्रकट कर सके।"

उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अपार शक्ति और संभावनाएँ हैं, और शिक्षा का कार्य है उन क्षमताओं को बाहर लाना।

3. व्यावहारिक और जीवनोपयोगी शिक्षा:

वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जो जीवन के संघर्षों में उपयोगी हो। आज की शिक्षा में कौशल विकास (skill development) और व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता है- जो उनके दृष्टिकोण से मेल खाती है।

स्वामी विवेकानन्द सैद्धांतिक शिक्षा के बजाय व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते थे। उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को अपने जीवन में आत्मनिर्भर बना सके।

4. समरसता और सामाजिक चेतना:

वे शिक्षा को समाज की सेवा का माध्यम मानते थे। आधुनिक युग में शिक्षा का सामाजिक उत्तरदायित्व फिर से विवेकानंद के विचारों से जुड़ सकता है। स्वामीजी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य देशभक्ति और समाज सेवा की भावना उत्पन्न करना होना चाहिए। वे चाहते थे कि विद्यार्थी अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण में करें।

5. आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा का समावेश:

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा में आत्मिक और नैतिक मूल्यों के समावेश की बात की थी। आज की शिक्षा प्रणाली में जहां तकनीकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर बल दिया जा रहा है, वहीं आत्मनिर्भरता, नैतिकता और समाजसेवा की शिक्षा की आवश्यकता बनी हुई है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि केवल बौद्धिक शिक्षा से समाज का भला नहीं हो सकता, हमें ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

6. आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की महत्वपूर्ण भूमिका:

स्वामी विवेकानंद ने हमेशा आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की बात की थी। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि उन्हें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भर बनाने का भी होना चाहिए। आज के समय में जहां युवा बेरोजगारी, मानसिक तनाव और आत्मविश्वास की कमी से जूझ रहे हैं। स्वामी विवेकानंद का यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है।

7. व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा का महत्व:

स्वामी विवेकानंद ने व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया था, क्योंकि उन्होंने महसूस किया था कि समाज के विकास के लिए यह आवश्यक है। आज के समय में भी जब तकनीकी विकास और व्यावसायिक कौशल की आवश्यकता बढ़ गई है, उनका यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करने में सक्षम हो। स्वामी विवेकानन्द सैद्धांतिक शिक्षा के बजाय व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते थे। उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को अपने जीवन में आत्मनिर्भर बना सके।

8. सार्वभौमिकता और समावेशिता:

स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण समाज के हर वर्ग और धर्म के व्यक्ति को समान अवसर देने का था। उन्होंने यह सिखाया कि शिक्षा का उद्देश्य सबको समान अवसर प्रदान करना और समाज के सभी वर्गों को एक साथ लाना है। आज की शिक्षा प्रणाली में भी यह आवश्यकता महसूस की जाती है कि सभी को समान शिक्षा प्राप्त हो और समाज में कोई भेदभाव न हो।

9. चरित्र निर्माण पर बल:

उन्होंने कहा था, "We want that education by which character is formed, strength of mind is increased, the intellect is expanded and by which one can stand on one's own feet." आज जब नैतिक मूल्यों की कमी महसूस की जा रही है, तब उनका यह विचार अत्यंत प्रासंगिक है।

10. मानवता की सेवा का भाव:

शिक्षा केवल डिग्रियों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाना चाहिए।

11. स्वावलंबन और आत्मविश्वास:

उन्होंने युवाओं से आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। यह आज के समय में रोजगार की बढ़ती चुनौतियों के बीच बहुत जरूरी है। वे नारी शिक्षा और निर्धनों की शिक्षा के भी प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि समाज का सच्चा उत्थान तभी संभव है जब सभी वर्गों को समान रूप से शिक्षा मिले।

12. ज्ञान और आध्यात्म का संतुलन:

विवेकानन्द पश्चिमी विज्ञान और भारतीय आध्यात्म के संतुलन की वकालत करते थे। आज भी शिक्षा को केवल तकनीकी नहीं बल्कि मूल्यपरक बनाने की आवश्यकता है।

स्वामी विवेकानन्द धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण शिक्षा की बात करते थे, जिसमें व्यक्ति न केवल भौतिक रूप से बल्कि आत्मिक रूप से भी प्रगति कर सके।

13. शिक्षा का उद्देश्य आत्मा की अभिव्यक्ति:

उनका मानना था कि "शिक्षा वह है जिससे हम अपने भीतर छिपी पूर्णता को अभिव्यक्त कर सकें।"

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार आधुनिक भारतीयकरण के परिप्रेक्ष्य में आज भी उतने ही प्रासंगिक और प्रेरणादायक हैं, जितने उनके समय में थे। उनके अनुसार, शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह चरित्र निर्माण, आत्मनिर्भरता, और मानवता की सेवा का साधन होनी चाहिए। उन्होंने शिक्षा को आत्मा की पूर्णता की अभिव्यक्ति माना, जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को संतुलित करती है। विशेष रूप से, नारी शिक्षा पर उनका जोर समाज के समग्र उत्थान के लिए क्रांतिकारी था, क्योंकि वे मानते थे कि शिक्षित और सशक्त महिलाएँ ही समाज की प्रगति की नींव हैं। आज के वैश्विक और तकनीकी युग में, जहां शिक्षा का ध्यान रोजगार और तकनीकी कौशल पर केंद्रित है, विवेकानन्द के विचार नैतिकता, देशभक्ति, और सामाजिक चेतना को पुनर्जनन देने में सक्षम हैं। उनकी शिक्षाएँ युवाओं को आत्मविश्वास, समावेशिता, और राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देती हैं। शिक्षा में पश्चिमी विज्ञान और भारतीय आध्यात्म का संतुलन उनकी दूरदर्शिता को दर्शाता है। इस प्रकार, स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन आधुनिक भारत के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत है, जो समाज को मूल्यपरक और सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अद्वैत आश्रम. (2016). स्वामी विवेकानन्द का संपूर्ण कार्य (खंड 1-9). कोलकाता: अद्वैत आश्रम.
2. रोलां, आर. (2008). विवेकानन्द का जीवन और सार्वभौमिक सुसमाचार (ई. एफ. माल्कम-स्मिथ, अनु.), कोलकाता: अद्वैत आश्रम. (मूल कार्य 1930 में प्रकाशित)
3. राधाकृष्णन, एस. (1992). भारतीय दर्शन (खंड 2). ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. रामकृष्ण मिशन. (2015). स्वामी विवेकानन्द: उनका जीवन और विरासत. बेलूर मठ: रामकृष्ण मिशन प्रकाशन.

5. भुयान, पी. आर. (2003). स्वामी विवेकानंद: शिक्षक. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया.
6. गुप्ता, एन. (2019). स्वामी विवेकानंद का शिक्षा का दृष्टिकोण: एक आधुनिक परिप्रेक्ष्य. भारतीय शिक्षा जर्नल, 45(2), 23-35.
7. सेन, ए. (2014). स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन और आज की प्रासंगिकता. मुंबई: भारतीय विद्या भवन.
8. शर्मा, आर. के. (2020). स्वामी विवेकानंद के विचारों में नारी शिक्षा की भूमिका. भारतीय लिंग अध्ययन जर्नल, 27(3), 345-360. <https://doi.org/10.1177/0971521520934432>
9. विवेकानंद, एस. (1893). विश्व धर्म संसद में संबोधन. स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण कार्य (खंड 1, पृष्ठ 3-19) में. कोलकाता: अद्वैत आश्रम.
10. चक्रवर्ती, एस. के. (2017). मूल्य और नैतिकता शिक्षा में: स्वामी विवेकानंद के दृष्टिकोण. नई दिल्ली: सेज प्रकाशन.